परिवर्तनशील समाज में उपेक्षित वृद्धजनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्राप्तिः 15.02.2021
स्वीकृतः 05.03.2021

डॉ0 अंचल गुप्ता
एसो0 प्रोफे0, समाजशास्त्र विभाग
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद

स्वाति सक्सेना
शोध अध्येत्री
Email: Saxena-saxenatax@gmail.com

सारांश

वर्तमान में बेहतर होती चिकित्सा सेवाओं, उच्च जीवन स्तर तथा बेहतर पोशाहार ने मानव जीवन को दीर्घायु बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, परिणामस्वरुप विश्व में वृद्धजनों की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि परिलक्षित हो रही है। आँकड़ों पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि सन् 1971 में 60 वर्ष की आयु के व्यक्तियों की कुल संख्या 3.3 करोड़ थी जो सन् 1991 में बढ़कर 5.5 करोड़ हो गयी।[1] सन् 2001 की जनगणना में वृद्धों की संख्या लगभग 7 करोड़ थी जो सन् 2011 की जनगणना में 10.3 करोड़ हो गई। यदि इसी प्रकार वृद्धों की संख्या में वृद्धि होती रही तो 2050 तक वृद्धों की संख्या 32.6 करोड़ पहुँचने की सम्भावना है।[2] कहने की आवश्यकता नहीं कि जिस प्रकार वृद्धों की जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है उसी प्रकार उनसे सम्बन्धित समस्याएँ भी बढ़ती जा रही हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति, व्यक्तिवादिता, व एकल परिवारों के बढ़ते प्रचलन के कारण वृद्धजन उपेक्षित हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में वृद्धजनों में पनप रही कुंठा, एकाकीपन व उपेक्षा के कारणों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः *वृद्धजन, उपभोक्तावादी संस्कृति, व्यक्तिवादिता एकल परिवार, एकाकीपन, उपेक्षा।*

प्रस्तावना

वर्तमान में तीव्रता से परिवर्तित होते हुए पारिवारिक, सामाजिक एवं साँस्कृतिक परिवेश के कारण हमारे वृद्धजनों के जीवन में पनप रही कुंठा, तनाव, अकेलापन, गिरता स्वास्थ्य, शारीरिक क्षीणता, असुरक्षा की भावना, आर्थिक संसाधनों तथा सम्मान का अभाव आदि समस्याओं में लगातार वृद्धि हो रही है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, उच्च जीवन स्तर की आकांक्षा, उपभोक्तावादी संस्कृति एवं व्यक्तिवादिता के कारण वृद्धजन न केवल युवापीढ़ी के द्वारा उपेक्षित किये जा रहे हैं अपितु संकुचित होते परिवारों ने उनकी रहन–सहन की दशाओं तथा परिवार में उनकी स्थिति को भी चुनौतीपूर्ण बना दिया हैं। वर्तमान में युवाओं के पास यदि वृद्धजनों के लिए समय का अभाव हे तो वृद्धजन भी इस परिवर्तित समाज में स्वंय को असहज पाते हैं। वृद्धावस्था में व्यक्ति के जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिनके कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सेवानिवृत्ति तथा उत्तरदायित्वों के निर्वहन के उपरान्त धन, शक्ति तथा कार्यशीलता में कमी व अवकाश के क्षणों में वृद्धि के कारण वृद्धजन एकाकीपन का शिकार

होने लगते हैं। फलतः उनमें असुरक्षा व हीनता की भावना पनपने लगती है जो धीरे धीरे व्यक्तित्व विघटन में परिवर्तित होने लगती है। प्रस्तुत शोधपत्र में वृद्धजनों की समस्याओं को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

साहित्य सवेक्षण

देसाई एवं नायक (1969) के द्वारा ग्रेटर बॉम्बे में किये गये अध्ययन ''रिटायर्ड पीपुल इन ग्रेटर बाम्बे'' के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि वृद्धों को सर्वाधिक चिन्ता आर्थिक सुरक्षा की होती है, इसलिए वे आर्थिक सहयोग की अपेक्षा करते हैं। साथ ही सामाजिक रुप से प्रतिष्ठा तथा प्रभुत्व में ह्रास भी उनकी समस्या है।[3]

टी0 कृष्णन नायर (1970) ने म्रदास में किये अपने अध्ययन ''ओल्ड पीपुल्स इन मद्रास सिटी'' में आवास, आर्थिक संबल, स्वास्थ्य, रोजगार व निर्धनता को वृद्धों की मुख्य समस्याएं बताया है।[4]

एन0 के0 सिंह (1977) ने अपने अध्ययन ''सोशियोलॉजिस्ट इन द फील्ड ऑफ जेरेन्टोलॉजी'' में बताया है कि आय व स्वास्थ्य में निरन्तर होने वाले ह्रास के कारण वृद्धजन परिवार व समाज में अपना स्तर खोते जा रहे हैं।[5]

एच0 एस0 भाटिया (1983) के राजस्थान में किये गये अध्यन ''ऐजिंग एण्ड सोसायटी'' के निष्कर्ष बताते हैं कि अधिकांश वृद्ध पोषक आहार से वंचित रहते हैं।[6]

परमजीत कौर (1992) के अध्ययन ''साइको–सोशल आसपेक्ट ऑफ ऐजिंग इन इण्डिया'' के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि एकाकी परिवारों के बढ़ते प्रचलन तथा परिवार के सदस्यों की आर्थिक कार्यो में निरन्तर बढ़ती हुई भागीदारी के फलस्वरुप वृद्धजनों की देखभाल एक समस्या बन गई है।[7]

शोध प्रारुप

प्रस्तुत आनुभविक शोध पत्र उ0प्र0 के मुरादाबाद जिले के 60 उत्तरदाताओं से एकत्र किये गये आँकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक तथ्यों को साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्र किया गया है तथा द्वितीयक तथ्यों का संकलन पुस्तकालय साहित्य के माध्यम से किया गया है।

उद्देश्य

वर्तमान में उपभोक्तावादी संस्कृति, व्यक्तिवादिता तथा एकाकी परिवारों के बढ़ते प्रचलन के कारण वृद्धों की बढ़ती उपेक्षा एवं एकाकीपन के कारणों को ज्ञात करना।

परिकल्पनाएं

1– आर्थिक रूप से बच्चों पर निर्भर होने के कारण वृद्धों की उपेक्षा में वृद्धि हुई है।

2– पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्धों में ह्रास के कारण वृद्धों के जीवन में एकाकीपन में वृद्धि हुई है।

उपलब्धियाँ

तालिका संख्या 01

वृद्धजनों की आर्थिक स्थिति

मतभार	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
आत्मनिर्भर	23	38.33
बच्चों पर निर्भर	37	61.67
योग	60	100

तालिका संख्या 01 के आँकड़ों से स्पष्ट है कि अधिकतम 61.67 प्रतिशत उत्तरदाता आर्थिक रुप से अपने बच्चों पर निर्भर है जबकि 38.33 प्रतिशत उत्तरदाता आत्मनिर्भर हैं अर्थात् यह प्रतिशत न्यूनतम रहा।

तालिका संख्या–02
पारिवारिक निर्णयों में वृद्धजनों को दिया जाने वाला महत्व

मतभार	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
पूर्ण	9	15
आंशिक	17	28.33
नहीं	34	56.67
योग	60	100

तालिका संख्या 02 के आँकड़ों से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 56.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं को पारिवारिक निर्णयों में कोई महत्व नहीं दिया जाता, 28.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं को आंशिक महत्व दिया जाता है जबकि केवल 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ही पारिवारिक निर्णयों में पूर्ण महत्व दिया जाता है।

तालिका संख्या 01 एवं 02 के रुझानों से अध्ययन की प्रथम उपकल्पना ''आर्थिक निर्भरता के कारण वृद्धों की उपेक्षा में वषद्धि हुई है'' की पुष्टि होती हैं।

तालिका संख्या –03
वृद्धावस्था में वृद्धजनों के पारिवारिक सम्बन्ध

मतभार	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
पूर्ववत	22	36.67
पूर्व से शिथिल	38	63.33
योग	60	100

तालिका संख्या 03 के रूझान बताते हैं कि सर्वाधिक 63.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पारिवारिक सम्बन्ध वष्द्धावस्था से पूर्व की तुलना में शिथिल हो गये हैं जबकि 36.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पारिवारिक सम्बन्ध वर्तमान में भी पूर्ववत ही हैं ।

तालिका संख्या 04

मतभार	उत्तरदाता संख्यां	प्रतिशत
एकाकी परिवारों का प्रचलन	17	28.34
युवाओं की अतिव्यस्तता	24	40.00
व्यक्तिवादिता	19	31.66
योग	60	100

तालिका संख्या 04 के रुझानों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 40 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक सम्बन्धों में ह्रास का कारण युवाओं की अतिव्यस्तता को मानते हैं, 28.34 प्रतिशत उत्तरदाता इसके लिए एकाकी परिवारों के प्रचलन को जिम्मेदार मानते हैं जबकि 31.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि बढ़ती व्यक्तिवादिता के कारण पारिवारिक सम्बन्धों में शिथिलता आ रही है।

तालिका संख्या–05

वृद्धजन एवं सामाजिक सम्बन्ध

मतभार	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
पूर्ववत	16	26.67
पूर्व से शिथिल	44	73.33
योग	60	100

तालिका संख्या 05 के रुझानों से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 73.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के सामाजिक सम्बन्ध पूर्व से शिथिल हो गये हैं, जबकि 26.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के सामाजिक सम्बन्ध पूर्ववत ही हैं तालिका संख्या 03 एवं 05 के रुझानों से अध्ययन की उपकल्पना ''पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्धों में ह्रास के कारण वृद्धों के जीवन में एकाकीपन में वृद्धि हुई है'' की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष

शोध पत्र की उपकल्पनाओं के सत्यापन के आधार पर शोध अध्येत्री का मत है कि सेवानिवृत्ति के उपरान्त तथा अपने त्तरदायित्वों का निर्वहन करने के पश्चात् अधिकांश वृद्धजन आर्थिक रुप से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बच्चों पर आश्रित हो जाते हैं। इसलिए बच्चों पर भी वृद्ध माता पिता की चिकित्सा तथा अन्य जरुरतों की पूर्ति करने का अतिरिक्त बोझ पड़ता है, जो धीरे धीरे परिवार में वृद्धों की स्थिति में ह्रास का कारण बनता है । बाद में यह स्थिति वृद्धों की उपेक्षा में परिवर्तित हो जाती है। इसके साथ ही बदलते हुऐ पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेष में जहाँ एक ओर एकाकी परिवार विस्तार पा रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर भागमभाग वाली जिन्दगी में युवा भी वृद्धों को समय देने में असमर्थ से दिखाई दे रहे हैं। इसके साथ ही अस्वस्थता

तथा शारीरिक क्रियाशीलता के अभाव में वृद्धों में सामाजिकता का भी ह्रास होने लगता है। फलतः संवादहीनता के अभाव में वृद्धों के जीवन में एकाकीपन में वृद्धि परिलक्षित हो रही है।

सुझाव

कहने की आवयकता नहीं कि वर्तमान में वृद्धावस्था समाज के सम्मुख एक गम्भीर समस्या के रुप में उभर रही है। वृद्धजनों की समस्याओं के समाधान में युवावर्ग की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। युवाओं को वृद्धजनों के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए उनके साथ थोड़ा समय व्यतीत करना चाहिए, साथ ही पारिवारिक निर्णयों में भी उनकी सलाह लेनी चाहिए जिससे उन्हें यह अनुभव हो कि परिवार के लिए वे अब भी महत्वपूर्ण हैं । वृद्धजनों को भी यथासम्भव क्रियाशील रहना चाहिए जिससे परिवार के सदस्यों पर निर्भरता कम से कम हो। इसके अतिरिक्त युवावस्था से ही व्यक्ति को अपनी आय का एक निश्चित हिस्सा आवश्यक रुप से बचाना चाहिए, जिससे सुरक्षित एवं आत्मनिर्भर वृद्धावस्था का आनंद लिया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1– जैन मधु एवं मेनन राकेश, *''द ग्रेइंग ऑफ इंण्डिया'*, इण्डिया टुडे, सितम्बर 30, 1991, पृ0 **46–55**

2– जनगणना रिपोर्ट 2011

3– देसाई के0 जी0 एवं नायक एच0एम0, *'प्राबलम्स ऑफ रिटायर्ड पीपुल इन ''ग्रेटर बॉम्बे'',* रिसर्च रिपोर्ट, आई.0आई0ए0एस0सिरीज, नं0 27, 1969

4– नायर टी0 कृष्णन, *'ओल्ड पीपुल इन मद्रास सिटी'',* मद्रास स्कूल ऑफ सोशल वर्क मद्रास 1970, पृ0 **52–55**

5– सिंह एन0 के0, *''सोशियोलॉजिस्ट इन द फील्ड आफ जेरेण्टोलॉजी,''* इण्डियन जनरल ऑफ जेरेन्टोलाजी, 2, 1977, पृ0 **28–33**

6– भाटिया एच0एस0, *'ऐजिंग एण्ड सोसायटी'',* आर्या बुक सेन्टर, पब्लिशर्स, उदयपुर, (राजस्थान), 1983

7– ढिल्लन परमजीत कौर, *'साइको–सोशल आसपेक्ट ऑफ ऐंजिंग इन इण्डिया'*, कन्सेप्ट पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 1992 पृ0 **16**